जेम्स मार्शल

जिसने सबसे पहले सोना खोजा

अंत में आरा मिल तैयार हुई. मज़दूर उसे शुरू करने को तैयार हैं. कुछ ही समय में मैं सफल हो जाऊंगा! और यही कारण है कि मैं न्यू-जर्सी से कैलिफोर्निया आया था.

ज़रा देखो! पानी में यह क्या है? पीला और एकदम चमकदार! क्या यह सोना हो सकता है? अगर यह सच है, तो इसका क्या मतलब हो सकता है - मेरे लिए. मेरी आरा मिल, और मेरी सफलता के लिए?

जेम्स मार्शल ने न्यू-जर्सी इसलिए छोड़ी क्यों कि वो बसने के लिए कोई रोमांचक जगह खोजना चाहता था. एक ऐसी जगह जहाँ उसे नए अवसर मिलें - ऐसी जगह जहां वह अपनी प्रतिभा का परीक्षण कर सके, अपनी हिम्मत से सुख-समृद्ध हो सके. और फिर वो पश्चिम की ओर आगे, और आगे बढ़ता गया.

"शायद कैलिफोर्निया वह जगह है जहां मेरा भाग्य चमकेगा," उसने सोचा. 1844 में, मार्शल वेस्ट-कोस्ट जाने वाली एक वैगन ट्रेन में सवार हो गया. अंत में जब वह कैलिफ़ोर्निया पहुंचा, तो वहां उसने सटर के किले में रहने का फैसला कियाँ. बाद में सटर का किला सैक्रामेंटो बना. वहाँ जेम्स ने जॉन सटर से मुलाकात की. सटर ने ही उस बस्ती की स्थापना की थी.

"मुझे एक नौकरी चाहिए. आप मुझसे जो जो कहेंगे मैं वो करूंगा. क्या आपको कोई कर्मचारी चाहिए?" मार्शल ने सटर से पूछा.

"तुम क्या-क्या कर सकते हो, नौजवान?" सटर ने पूछा. मार्शल ने आत्मविश्वास से जवाब दिया, "मैं एक बढ़ई हूं, मैं बैलगाड़ी के पहिये बना सकता हूँ, मैं एक मेहनती आदमी हूं. आप मुझे कोई भी काम करने को दे सकते हैं."
"शायद मेरे पास तुम्हारे लिए कोई काम हो," सटर ने युवा अजनबी को देखकर कहा.
"मैं आपको यह भी बताना चाहता हूँ," मार्शल ने जारी रखा," मैं अपने जीवन को सफल बनाना चाहता हूं. मैं जो भी काम करूं वो मुझे अपने लक्ष्य तक पहुंचने में मदद ज़रूर करे."
सटर ने सिर हिलाया. "मुझे ऊंची महत्वाकांक्षा वाले लोग पसंद हैं. क्या तुम्हें लकड़ी व्यवसाय के बारे में कुछ पता है?"

"हाँ मैं उस धंधे के बारे में काफी कुछ जानता हूँ," मार्शल ने कहा. उसने गर्मियों में खुद अपना घर बनाया था. "घर बनाना लकड़ी उद्योग के व्यवसाय का ही एक हिस्सा है," उसने खुद से सोचा.

"अच्छा," सटर ने कहा. "मुझे अपने विशाल खेत को चलाने के लिए बहुत लकड़ी की आवश्यकता है. उसका एकमात्र रास्ता है कि मैं खुद अपनी आरा-मिल खोलूं. क्या तुम उसमें मेरे साथी बनना चाहोगे?" सटर से पूछा. "पार्टनर," मार्शल ने कहा. "उसके लिए मुझे क्या करना होगा?"

"तुम पूरी आरा मिल के इंचार्ज होगे. तुम उसके निर्माण की देखरेख करोगे. और मिल बनने के बाद तुम दिन-प्रतिदिन उसके संचालन का काम करोगे. मैं निर्माण लागत का पूरा खर्चा उठाऊंगा."

"हाँ, एक बार जब लकड़ी का उत्पादन शुरू जो जायेगा, तब हम मुनाफे को आपस में बांटेंगे," सटर ने कहा.
मार्शल ने एक मिनट के लिए अपनी आँखें बंद कीं. "हाँ," उसने सोचा. "मैं खुद को एक आरा-मिल चलाते हुए देख सकता हूं." वह लगभग ब्लेडों की आवाज़ को सुन सकता था और ताज़ी कटी हुए चीड़ की लकड़ी की खुशबू को सूँघ सकता था. वह खुद को मज़दूरों के बीच एक शक्तिशाली और सम्माननीय व्यक्ति के रूप में देख भी सकता था.
"ठीक है," जेम्स ने कहा. फिर उसने मज़बूती से सटर के साथ हाथ मिलाया. "सौदा पक्का," उसने कहा.

1847 की गर्मियों में, मार्शल ने नई आरा-मिल के लिए जगह खोजने के लिए 50 मील दूर पूर्व की यात्रा की. सबसे पहला काम उसने कोलोमा इंडियंस के साथ किया. उसने उन्हें आरा-मिल बनने वाली जमीन की उचित कीमत चुकाई. कोलोमा इंडियंस ने मार्शल की निष्पक्षता की सराहना की और उसके प्रस्ताव को मान लिया. उसके बाद से मार्शल के कोलोमा इंडियंस के साथ अच्छे संबंध बने रहे.

आरा-मिल को बनाने में कई महीने लगे. लेकिन आखिरकार वो काम खत्म हो गया. जनवरी 1848 तक, केवल एक काम बचा था. बस एक नाली खोदनी बाकी थी. यह खाई, वाटरव्हील (पनचक्की) के पानी को दूर करती. आरा मिल के सुचारू संचालन के लिए यह कार्य महत्वपूर्ण था.

"ठीक है," मार्शल ने सोचा, कल सुबह मैं जल्दी उठूंगा और इसे स्वयं करूंगा. कल शाम तक, हम आरा मिल को शुरू कर देंगे."

अगली सुबह, मार्शल सुबह उठकर वाटरव्हील की ओर चला. जब वह खाई के पास पहुंचा, तो उसकी आंख को कुछ अनूठी चीज़ दिखाई दी - कोई चीज़ पानी में चमक रही थी.

मार्शल ने विस्मय से चमकती हुई वस्तु को देखा. उसने पहले कभी ऐसा कुछ भी नहीं देखा था. ध्यान से उसने उस डली को उठाया. जैसे उसने उसका अध्ययन किया एक विचार उनके मस्तिष्क में कौंधा! क्या वो सोना हो सकता है?

"यह नहीं हो सकता ...," वह फुसफुसाया "या फिर हो भी सकता है?"

वो उस डली की असलियत जानना चाहता था. उसने अपनी जेब से एक सोने का सिक्का निकाला. सोने की डली, सिक्के के समान रंग की थी. फिर मार्शल ने डली को पत्थर पर रखकर उसे एक चट्टान से पीटा. ऐसा करने से अधिकांश चट्टानें या धातुएँ बिखर जातीं. लेकिन डली बस बाहर से कुछ चपटी हुई.

अब मार्शल और भी उत्साहित हो गया. वह अपने हाथ की हथेली में उस चमकती हुई धातु को ध्यान से पकड़कर अपने कमरे में वापस गया. वहां उसे कुछ लाई मिली (कास्टिक सोडा). लाई को साबुन बनाने के लिए इस्तेमाल किया जाता है. उसने लाई को एक बर्तन में डाला. फिर उसने चिमनी में आग के ऊपर उस बर्तन को रखा. जब लाई उबलने लगी तो उसने डली को बर्तन में गिरा दिया.

"मुझे इस प्रयोग से पक्का पता चल जायेगा," उसने उत्सुकता से सोचा. "अगर वो सोना नहीं है, तो वो पिघल जाएगा या, उसमें दरार पड़ेगी और फिर वो जल जाएगा."

लेकिन डली नहीं पिघली. उसमें कोई दरार भी नहीं पड़ी. जब आखिरी परीक्षण पूरा हुआ तो मार्शल को अपनी खोज के बारे में निश्चित रूप से पता चला.
"सोना!" वह उल्लास से फुसफुसाया. "मुझे सोना मिला! सोना! सोना! सोना!"

मार्शल अपने साथी के साथ इस खुशखबरी साझा करने के लिए अधिक इंतजार नहीं कर सका. उसने अपने मज़दूरों के लिए एक नोट लिखा, जिसमें उसने उन्हें मिल चालू करने के लिए कहा. फिर वो अपने घोड़े पर कूदकर सटर के किले की ओर बढ़ा. उसकी जेब में, एक साफ रूमाल में वह कीमती पीले रंग की डली लिपटी हुई थी जिसे उसने टेस्ट किया था.
जब मार्शल बस कुछ ही मील की दूर गया तो वो एक भयानक तूफान में फंस गया. लेकिन वो रुका नहीं. उसने अपने गीले कपड़ों और ठंडी बारिश पर ध्यान नहीं दिया. वह सीधा सटर के घर पहुंचा. वो पानी से भीगा हुआ, और कीचड़ से सना हुआ था. वह सामने वाले के दरवाजे की ओर बढ़ा.

"स्वर्ग की खातिर," दरवाजा खोलते ही वो सटर पर चिल्लाया. जब सटर ने अपने साथी को इस हालत में देखा, तो उसने उसे चिंता से उसे घूरा. "जेम्स! क्या हुआ? सब ठीक तो है? तुम आरा-मिल में क्यों नहीं हो?“

"मैं आपको यहाँ नहीं बता सकता," मार्शल ने बेफ़िक्र होकर कहा "यहाँ कोई भी मेरी बात को सुन सकता है. एक बार जब हम बंद दरवाजे के पीछे होंगे, तब मैं आपको सब कुछ समझा दूंगा. ”

मार्शल अपने साथी को घूरते रहा. "पागल हो गए हो क्या?" उन्होंने एक मिनट के बाद पूछा. "क्या बात है?"
"मैं आपको यहां नहीं बता सकता. कृपया," मार्शल ने आग्रह किया, "कृपया, पहले अंदर चलें.“

सटर, मार्शल को घर के अंदर लाये. वो उसे अपने अध्ययन कक्ष में ले गए और फिर उन्होंने दरवाजा बंद कर दिया. मार्शल वहाँ खड़ा था, गीला, टपकता हुआ. फिर उसने अपनी जेब में से पीले अयस्क वाला रूमाल बाहर निकाला.

"ज़रा इस पर एक नज़र डालें," उसने कहा. फिर उसने सोने की डली को बाहर निकाला और उसे सटर को पकड़ाया. "मुझे आज सुबह यह डली मिली.“

सटर पल भर के लिए हतप्रभ हो गया. फिर उसका चेहरा बदल गया. उसकी आँखें चौड़ी हो गईं और उसका मुँह खुला का खुला रह गया.

"क्या मुझे लगता है कि यह है........ ?"
"आप शर्त लगा सकते हैं," मार्शल ने एक बड़ी मुस्कराहट के साथ कहा. "यह सोना है!"
"क्या तुम्हें पक्का यकीन है?” सटर ने पूछा.

मार्शल ने उन परीक्षणों का वर्णन किया, जो उसने सोने की डली पर किये थे. फिर सटर बुकशेल्फ़ पर गया और उसने एक विश्वकोश निकाला. सटर ने सोने के सभी गुणों के बारे में जोर से पढ़ा. अंतिम परीक्षण के रूप में, उसने डली को नाइट्रिक एसिड में डुबो दिया. डली बिलकुल नहीं बदली. अब सटर आश्वस्त था. वो डली - असली सोने की थी!

सटर ने एक आह भरी और अपने हाथों से अपनी आँखों को रगड़ा. सोना ...

"क्या यह शानदार नहीं है?" मार्शल ने उत्साह के साथ बुदबुदाते हुए कहा.

"नहीं?" सटर बोला, "जेम्स! क्या तुम नहीं देख रहे हो? यह सोना हमें बर्बाद कर देगा?"

“आप किस बारे में बात कर रहे हैं?“ मार्शल ने रोते हुए कहा. “आज हमारा सचमुच का सपना पूरा हुआ है.“

"देखो, जल्द ही यह खबर सब जगह फ़ैल जाएगी. और फिर हमारी जमीन के चप्पे-चप्पे पर लोग सोने की खुदाई करेंगे. हमारे मज़दूर भी हमारा काम छोड़कर सोने की तलाश के लिए भागेंगे, और तब हमें आरा-मिल बंद करनी होगी. सोना हमारे लिए विनाशकारी होगा. इंडियंस लोगों में सोने के बारे में एक कहावत है. उसके अनुसार जिसे भी सोना मिलेता है उसकी किस्मत खराब हो जाती है.”

मार्शल को इसके एक शब्द पर भी विश्वास नहीं हुआ. वह हँसा और उसने सटर को चिंता नहीं करने को कहा. लेकिन छह महीने बाद, मार्शल की हंसी बंद हो गई. सोने की खोज की खबर आग जैसे सब तरफ फ़ैल गई थी. खनिकों ने उसकी भूमि पर चढ़ाई कर दी थी. खनिकों ने सटर की आरा-मिल के चारों ओर अपने शिविर और डेरे लगाए. मार्शल के ज़मीन को सुरक्षित रखने के प्रयास एकदम विफल रहे. सटर और मार्शल को जमीन पर अपना दावा छोड़ने के लिए मजबूर होना पड़ा.

सटर की भविष्यवाणी धीरे-धीरे सच हुई. आरा मिल के मजदूरों ने अपनी मज़दूरी छोड़ दी. वे भी सोने की तलाश में पहाड़ियों पर खुदाई करने लगे. मार्शल की सुंदर नई आरा-मिल को चलाने के लिए अब कोई मज़दूर नहीं बचा था. भाग्य ने उसकी सारी उम्मीदों पर पानी फेर दिया था. कोलोमा भारतीयों के साथ संबंध जल्दबाज़ी में बिगड़ गए. सोना खनिकों ने इंडियन जनजाति के किसी भी अधिकार का सम्मान नहीं किया. हरेक सप्ताह नए पुरुषों की बड़ी भीड़ के पहुँचने से इंडियंस को खतरा महसूस हुआ. फिर इंडियंस और खनिकों के बीच दुश्मनी और खून खराबा हुआ.

1848 में, मार्शल यह सब असहाय रूप से देखता रहा. उसके चारों ओर सफलता की सारी उम्मीदें अब टूट गईं थीं. आरा मिल को चलाने के लिए मज़दूर न मिलने के कारण मार्शल और सटर को आरा-मिल बंद करने के लिए मजबूर होना पड़ा.

कुछ समय के लिए मार्शल कुछ अन्य खनिकों के साथ सोने की खुदाई में शामिल हुआ. कुछ खनिकों को लगा कि मार्शल के पास सोने को खोजने की जादुई शक्ति थी. एक बार कुछ उपद्रवी लोगों के एक समूह ने मार्शल को फांसी देने की धमकी तक दी. वे चाहते थे कि मार्शल उन्हें सोने की कोई नई खदान तक ले जाए.

हालांकि, पहली सोने की डली के अलावा, मार्शल को और सोना खोजने का सौभाग्य नहीं मिला. मार्शल कुछ औंस से ज्यादा सोना कभी नहीं खोज पाया.

मार्शल को वो इंडियन किंवदंती याद आई जो उसे सटर ने बताई थी. वो अचरज करता था कि उसकी बुरी किस्मत कब खत्म होगी.

समाप्त